ईडन में ईव को प्रलोभित करने वाले सर्प को भगवान ने क्यों
नहीं मारा?

बहुत से लोग यह सवाल पूछते हैं: अगर भगवान सर्वशक्तिमान और सर्वशुभ हैं, तो उन्होंने सर्प (शैतान) को क्यों नहीं नष्ट किया और ईव को प्रलोभित होने से क्यों नहीं रोका?

इस प्रश्न को समझने के लिए यह जानना जरूरी है कि भगवान मनुष्यों को परीक्षा और चुनौतियों का सामना करने क्यों देते हैं। धार्मिक दृष्टि से, भगवान सर्वोच्च हैं (भजन संहिता 115:3), लेकिन उन्होंने मनुष्यों को स्वतंत्र इच्छा दी है। अपनी अनंत बुद्धि में, वे परीक्षा की अनुमति देते हैं—हमारे पतन के लिए नहीं, बल्कि अपने स्वरूप को दिखाने, हमारे चरित्र को सँवारने और हमें अपने निकट लाने के लिए।

1. भगवान परीक्षाओं के माध्यम से अपने स्वरूप को प्रकट करते हैं

अगर मानव कभी नहीं गिरता, तो हम उन्हें उद्धारकर्ता के रूप में नहीं जानते।
अगर हम कभी कमजोर या बीमार नहीं होते, तो हम उन्हें चिकित्सक के रूप में नहीं पहचानते (निर्गमन 15:26)।
अगर हम कभी पाप नहीं करते, तो हम उनकी दया, अनुग्रह और क्षमा का अनुभव नहीं कर पाते (एफ़िसियों 2:4–5, 8–9)।

परीक्षाएँ हमें भगवान को व्यक्तिगत रूप से जानने का अवसर देती हैं—केवल सृष्टिकर्ता के रूप में नहीं, बल्कि उद्धारकर्ता, सहायक और प्रेमपूर्ण पिता के रूप में।

2. भगवान परीक्षा के माध्यम से हमारे विश्वास को मजबूत करते हैं

जैसे सोने को आग में परखा और शुद्ध किया जाता है, वैसे ही भगवान विश्वासियों को परीक्षा में डालते हैं ताकि उनका विश्वास और चरित्र मजबूत हो।

1 पतरस 1:6–7
“तुम्हें हर प्रकार की परीक्षाओं में दुःख सहना पड़ सकता
है। यह सब इसलिए है ताकि तुम्हारे विश्वास की प्रामाणिकता,
जो सोने से भी अधिक मूल्यवान है, जब येशु मसीह प्रकट होंगे,
तो प्रशंसा, महिमा और सम्मान का कारण बने।”

ईडन में, भगवान ने सर्प को नहीं रोका क्योंकि वे चाहते थे कि आदम और ईव उन्हें स्वेच्छा से चुनें। बिना विकल्प के प्रेम सच्चा प्रेम नहीं है। भगवान ने उन्हें स्वतंत्रता दी, लेकिन उन्होंने अवज्ञा करना चुना। फिर भी, भगवान पहले से ही उद्धार की योजना तैयार कर चुके थे (प्रकाशितवाक्य 13:8)।

3. भगवान हमारी विफलताओं के माध्यम से भी अपने उद्देश्य को पूरा करते हैं

ईव प्रलोभित हुई और पाप में गिरी, लेकिन भगवान का उद्देश्य यहीं खत्म नहीं हुआ। वे हमारी विफलताओं के माध्यम से अपने महान उद्देश्य को पूरा करते हैं।

यिर्मयाह 29:11
“क्योंकि मैं जानता हूँ कि मैंने तुम्हारे लिए क्या योजना
बनाई है,” यहोवा कहता है, “योजना तुम्हें सफलता देने की है, तुम्हें हानि पहुँचाने की नहीं; योजना तुम्हें आशा और
भविष्य देने की है।”

पतन के माध्यम से, भगवान ने अपनी दया दिखाई और मसीह के आगमन की ओर इशारा किया—महिला के बीज के रूप में, जो सर्प के सिर को कुचल देगा (उत्पत्ति 3:15)। यह यीशु की शैतान पर पहली जीत की भविष्यवाणी है।

4. भगवान हमारे प्रति धैर्यवान और दयालु हैं

मानवता गिर गई, लेकिन भगवान ने हमें नहीं छोड़ा। वे हमारी कमजोरियों को समझते हैं और दया दिखाते हैं।

भजन संहिता 103:12–14
“जैसे पूर्व से पश्चिम दूर है, वैसे ही उन्होंने हमारे अपराधों को हमसे दूर किया।
जैसे पिता अपने बच्चों पर दया करता है, वैसे ही यहोवा अपने
डरने वालों पर दया करता है।
क्योंकि वह जानता है कि हम कैसे बने हैं, वह याद रखता है कि हम धूल हैं।”

यह दिखाता है कि भगवान का उद्देश्य केवल पाप को रोकना नहीं है—बल्कि पापियों को उद्धार देना और उन्हें अनंत जीवन देना है। इसलिए उन्होंने सर्प को तुरंत नष्ट नहीं किया—उनके पास मसीह के माध्यम से खुलने वाली मुक्ति की योजना थी।

निष्कर्ष: ईडन में सर्प को भगवान ने क्यों नहीं मारा

1. उन्होंने चुनाव और स्वतंत्र इच्छा दी।
2. परीक्षाएँ हमें उन्हें जानने और विश्वास मजबूत करने में मदद करती हैं।
3. उनकी योजना में दयालुता और उद्धार को प्रकट करना शामिल था।
4. उनका अंतिम उद्देश्य हमारे साथ अनंत जीवन है—केवल अस्थायी परिपूर्णता नहीं।

रोमियों 8:28
“और हम जानते हैं कि जो लोग उसे प्रेम करते हैं, जिन्हें
उसके उद्देश्य के अनुसार बुलाया गया है, उनके लिए परमेश्वर

> सब चीजों में भले के लिए काम करता है। ”

भगवान की बुद्धि और प्रेम को समझने में आपका जीवन धन्य और बढ़ता रहे।

Share on:
WhatsApp

Print this post